महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

A State University Established Under Uttar Pradesh State University Act 1973

(Accredited A++ by NAAC)

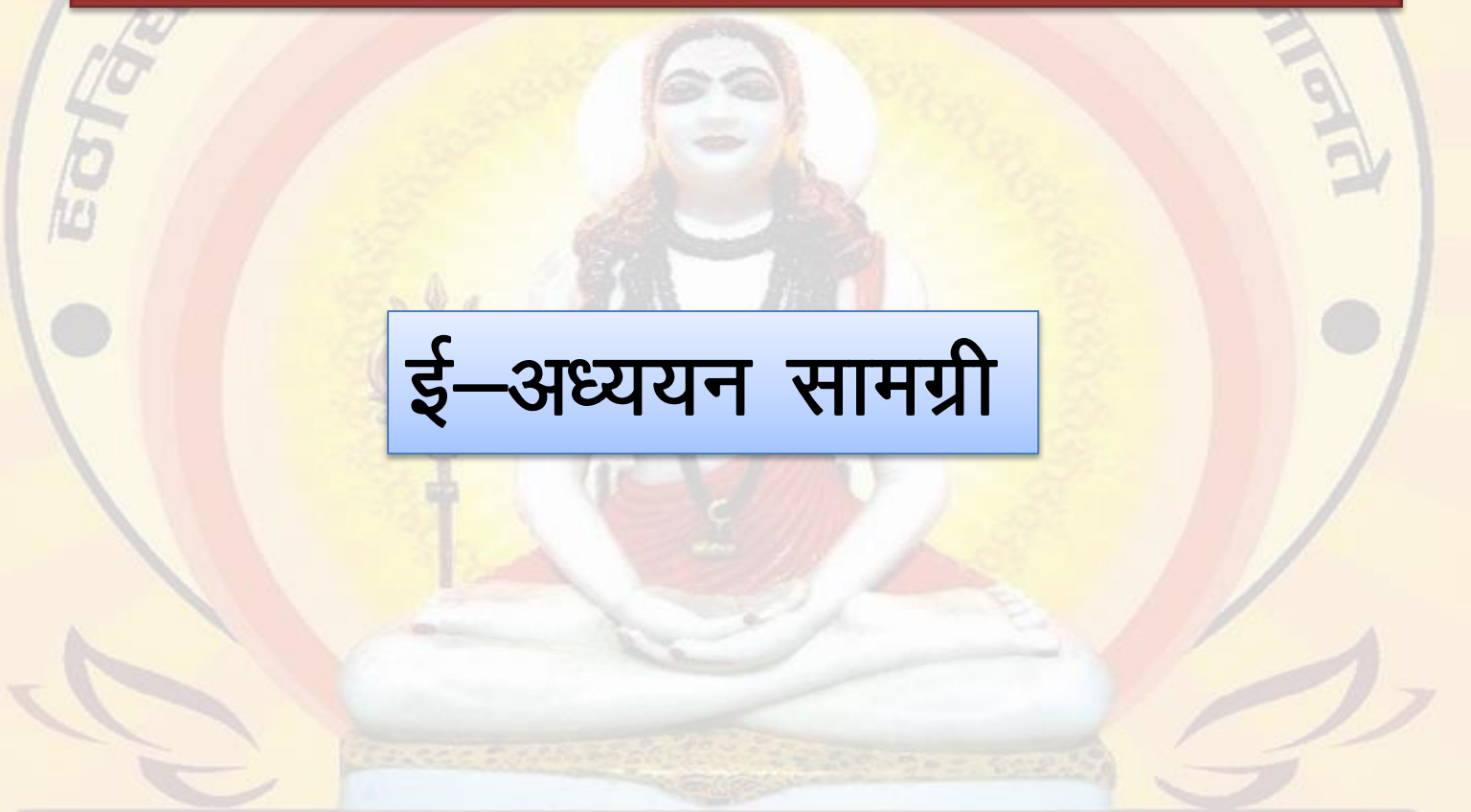

ई–अध्ययन सामग्री

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

Ability Enhancement Course
Course Code – AE1MYGSP

नाथपंथ एवं दर्शन
हेतु
सहायक अध्ययन सामग्री

अध्ययन सामग्री निर्माण :
महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

पाठ्यक्रम

Unit 1st: Origin and Development of Nath Pantha.
Unit 2nd : History and Basic texts of Nath Pantha and related literature.
Unit 3rd : Nath Pantha Sadhana : Practices, Gurus, Siddhas, The aim of Naths, Initiation.
Unit 4th : Influence and Contemporary Nath lineages.
Unit 5th : Comparative study with others yogis :

1. (a) Goraknath and Gautam Buddha
   (b) Goraknath and Patanjali
2. (a) Goraknath and Swami Vivekanand
   (b) Goraknath and Paramahansa Yoganand
   (c) Goraknath and Sri Aurobindo

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

इकाई – 1
नाथपंथ का उद्भव व विकास

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

भारतीय चिंतन–परम्परा, एक सामान्य परिचय

- भारतीय चिंतन–परम्परा जीवन से जुड़े लौकिक प्रश्नों के हल के साथ ही अलौकिक प्रश्नों का भी समाधान प्रस्तुत करती है।
- नाथपंथ का मूल स्रोत शैव सम्प्रदाय है।
- भारतीय साधना पद्धतियों में गोरखनाथ और नाथ पंथ का प्रमुख स्थान है।
- नाथ सम्प्रदाय भारत की सनातन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण घटक है।
- मध्ययुग में उत्पन्न इस सम्प्रदाय में शैव, बौद्ध तथा योग की परम्पराओं का समन्वय दिखायी देता है।
- यह हठयोग की साधना पद्धति पर आधारित पंथ है।
- शिव इस सम्प्रदाय के प्रथम गुरु एवं आराध्य हैं। इसके अलावा इस सम्प्रदाय में अनेक गुरु हुए जिनमें गुरु मच्छिन्द्रनाथ अथवा मत्स्येन्द्रनाथ तथा गुरु गोरखनाथ सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।
- नाथ सम्प्रदाय समस्त देश में फैला हुआ था।
- गुरु गोरखनाथ ने इस सम्प्रदाय की योग विद्याओं का एकत्रीकरण किया, अतः इसके संस्थापक गोरखनाथ माने जाते हैं।
- नाथ सम्प्रदाय में योगी और जोगी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. एक जो संन्यासी जीवन और दूसरा गृहस्थ जीवन है।
- इनके कुछ गुरुओं के शिष्य मुसलमान, जैन, सिख और बौद्ध धर्म के भी थे।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

नाथ पंथ का परिचय

- नाथ शब्द "नाथ" धातु से बना है।
- नाथ सम्प्रदाय के ग्रन्थों में नाथ मत के लिये विविध शब्द प्रचलित हैं।
- "नाथ" का प्रचलित अर्थात् सामान्य अर्थ होता है – "परम तत्व" अथवा "ब्रह्म एवं गुरु"।
- "नाथ" का शाब्दिक एवं दार्शनिक अर्थ भिन्न–भिन्न प्रकार का होता है।
- "नाथ" शब्द के प्रायः प्रचलित दोनों अर्थात् परमतत्व अथवा "ब्रह्म एवं गुरु" का तात्पर्य होता है श्रेष्ठ अथवा मार्गदर्शक या ऐसा व्यक्ति जो कि निरन्तर पथ–प्रदर्शन का कार्य करने वाला हो।
- नाथपंथ के अन्तर्गत समस्त चराचर जगत् का आधार नाद एवं बिन्दु को माना गया है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

नाथ पंथ का उद्भव एवं परिस्थिति जन्य कारक

- नाथपंथ के उद्भव के समय देश में निम्न व्यवस्थाओं के साथ कुछ कुव्यवस्थाएँ भी प्रचलित थीं, जिनकी वजह से ही नाथपंथ के सुधारात्मक विचारों की आवश्यकता का अनुभव हुआ।
- भारत देश की संस्कृति एकत्व में वैविध्य का अद्भुत समन्वय।
- भारतीय परम्परा में अनेक पंथों और सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव।
- नाथपंथ के उद्भव के कारण
- वैदिक समाज की वर्णाश्रम व्यवस्था।
- चार प्रमुख वर्ण : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
- पौराणिक व्यवस्था : धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की अवधारणा की विस्तृत विवेचना।
- आगम और निगम परम्परा।
- वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् जैसे विशाल साहित्य का सृजन।
- भारतीय संस्कृति और यज्ञीय परम्परा।
- दिव्य गुणों के विकास से मानव जीवन को देवत्व तक पहुंचाना इस संस्कृति का मूल मन्त्र रहा है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- इसी भारतीय संस्कृति में अनेक पंथों और सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव भी हुआ। शैव, वैष्णव, शाक्त सम्प्रदाय और इनके उप सम्प्रदाय।
- वैदिक समाज की व्यवस्था वर्णाश्रम धर्म पर आधारित थी जिनमें चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र थे।
- कालान्तर में एक ऐसे वर्ग का उदय हुआ, जिसका समावेश किसी वर्ण–विशेष के अन्तर्गत नहीं हो सकता था।
- "अवर्ण" होने से इनको वैदिक यज्ञ–साधना में भी प्रवेश नहीं मिल सका।
- अतः वर्णाश्रम के साथ यज्ञ प्रक्रिया का क्षीण स्वर में विरोध प्रारम्भ हुआ और धीरे–धीरे प्रखर होने लगा।
- पुराणों के साथ–साथ तांत्रिक उपासना का प्रारम्भ हुआ।
- चमत्कार, तंत्र से जुड़ा हुआ था, अतः जिन्हें किसी साधना पद्धति में प्रश्रय नहीं मिला, वर्णाश्रम से बहिष्कृत हुए वे लोग इस ओर अधिक आकृष्ट होते चले गये।
- कोई शाक्त हुए, कोई शैवानुयायी हुए तो कोई कौल कहलाये, परन्तु तांत्रिक उपासना और ब्रह्मचर्य के कठोर संयम का पालन इतना आसान न था।
- इसके पालन में जरा सी असावधानी भी पूरी साधना को अनिष्ट कर सकती थी। इसलिए इस मार्ग को "वाममार्ग" कहा गया, हालांकि सामान्य वर्ग के लिये यह मार्ग प्रशस्त नहीं हो पाया, लेकिन यह मार्ग तन्त्र, वेदों का विरोधी नहीं था।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- जैन और बौद्ध मत ने वैदिक परम्परा से हटकर अपने कल्याण का अलग मार्ग ढूँढ लिया।
- जैन–मत मूलतः विरक्तिपरक कठोर तपस्या और संयम भरे पथ को प्रशस्त करता था, पर धर्म के प्रवृत्तिमूलक स्वरूप के व्यवहार–पक्ष पर जैनाचार्यों का चिन्तन सर्वांग–परिपूर्ण न होने से इस मत का धार्मिक आचार केवल साधुओं–मुनियों तक ही सीमित रहा।
- अब तक वैदिक व्यवस्था चरमरा गयी थी, जनसामान्य दिग्भ्रमित था, भारत में विदेशियों का आगमन और अति वर्णाश्रमी व्यक्तियों को विदेशियों के धर्म में धर्मान्तरित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी थी। ऐसे समय में नाथ पंथ के महापुरुष गोरखनाथ का प्रादुर्भाव हुआ।
- महायोगी गोरखनाथ ने समाज को संगठित करने का कार्य किया।
- उन्होंने शैव, शाक्त, कौल यहां तक कि मुसलमानों को भी अपने पंथ में स्वीकार कर लिया।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- ये लोग रावल पीर कहलाते हैं।
- आने वाले समय में गोरखनाथ के अनुयायियों ने एक ऐसे समाज का निर्माण किया जो न हिन्दू था, न मुसलमान।
- भारत में धार्मिक प्रवृत्तियां प्रारम्भ से रही हैं। इसकी स्पष्ट जानकारी उत्खनन में प्राप्त मूर्तियों एवं अवशेषों से मिलती है।
- यहाँ शिव, विष्णु, देवी, गणेश आदि पूजा संबंधी साक्ष्य छठी–सातवीं शताब्दी से मिलते हैं।
- शैव सम्प्रदाय भगवान शंकर की पूजा से संबंधित है।
- इस सम्प्रदाय में के अन्तर्गत अन्य कई मतों का उदय हुआ, जिनमें "पाशुपत" एवं "कापालिक" थे।
- शनैः–शनैः इन मतों में कापालिक मत के अनुयायियों की कठोर मर्यादाएं नहीं रहने पर अंतर्विरोध के स्वर उभरने लगे तथा शैवमत से नाथ सम्प्रदाय का प्रकटीकरण हुआ।
- विभिन्न हिन्दू ग्रंथो में नाथ संप्रदाय के अनेक नामों का उल्लेख मिलता है।
- "हठयोग प्रदीपिका की टीका" में ब्रह्मानंद ने लिखा है कि सब नाथों में प्रथम आदिनाथ हैं, जो स्वयं शिव ही हैं और ऐसा नाथ संप्रदाय के लोगों का विश्वास है इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि ब्रह्मानंद इस संप्रदाय को "नाथ संप्रदाय" नाम से ही जानते थे।
- भिन्न–भिन्न ग्रंथों में यह उल्लेख प्राप्त होता है कि यह मत "नाथोक्त" अर्थात् "नाथ" द्वारा कथित है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

इकाई – 2
इतिहास और नाथ पंथ के ग्रंथ तथा संबंधित साहित्य

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

नाथ पंथ का इतिहास

- नाथ पंथ भारत का एक धार्मिक और आध्यात्मिक आंदोलन है, जो नाथ योगियों के साथ अपने संबंधों के लिए जाना जाता है।
- इसकी उत्पत्ति मत्स्येंद्रनाथ और गोरखनाथ की शिक्षाओं से मानी जाती है जिन्हें परंपरा के संस्थापक के रुप में माना जाता है।
- नाथ पंथ का उदय 9वीं शताब्दी के आसपास हुआ और यह भारत तथा एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावशाली हो गया।
- नाथ परंपरा आध्यात्मिक अनुभूति और मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त करने के साधन के रूप में योग, ध्यान और तपस्या पर बल देती है।
- इसके अभ्यासकर्ता, जिन्हें नाथ योगी या नाथ के नाम से जानते हैं, वे आंतरिक शक्ति का शोधन करने और सांसारिक बंधंनों से परे जाने के उद्देश्य से दार्शनिक सिद्धांतों और गूढ़ प्रथाओं का पालन करते हैं।
- इसने नाथ संतों और गुरुओं को समर्पित कई मंदिरों और मठ केंद्रों के साथ, भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य को आकार देने में भी भूमिका निभाई है।
- सदियों से, नाथ पंथ उप–संप्रदायों में विभाजित हो गया है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी व्याख्याएं और प्रथाएं हैं।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- नाथ योग परंपरा की समकालीन भारत में प्रासंगिकता बनी हुई है, कई अभ्यासी और अनुयायी इसकी शिक्षाओं के माध्यम से आध्यात्मिक मार्गदर्शन और ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं।
- नाथ योगी को स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है।
- मेखला, श्रृंगी, सेली, गूदरी, खप्पर, कर्ण–मुद्रा, बाघम्बर, झोला आदि चिह्न ये लोग धारण करते हैं।
- पहले ही बताया गया है कि कान फाड़कर कुण्डल धारण करने के कारण ये लोग कनफटा भी कहे जाते हैं।
- कान फड़वाने की प्रथा किस प्रकार शुरू हुई इस विषय में नाना प्रकार की दन्तकथाएँ प्रचलित हैं।
- कुछ लोग बताते हैं कि स्वयं मत्स्येन्द्रनाथ (मछन्दरनाथ) ने इस प्रथा का प्रवर्तन किया। उन्होंने शिव के कानों में कुण्डल देखा था और उसे प्राप्त करने के लिए कठिन तपस्या की थी।
- एक दूसरा विश्वास यह है कि गोपीचन्द की प्रार्थना पर जालन्धरनाथ ने इस पन्थ के योगियों को अन्य सम्प्रदाय वालों से विशिष्ट करने के लिए इस प्रथा को चलाया था।
- कुछ लोगों का कहना है कि गोरक्षनाथ ने भरथरी का कान फाड़कर इस प्रथा को चलाया था।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- भरथरी के कान में गुरु ने मिट्टी का कुण्डल पहनाया था।
- अब भी बहुत–से योगी मिट्टी का कुण्डल धारण करते हैं परन्तु इसके टूटने की सदा आशंका बनी रहती है इसलिए धातु या हरिण के सींग की मुद्रा धारण की जाती है।
- जो विधवा स्त्रियाँ सम्प्रदाय में दीक्षित होती हैं वे भी कुण्डल धारण करती हैं और गृहस्थ योगियों की पत्नियाँ भी इसे धारण करते पायी जाती हैं।
- नाथपन्थियों का मुख्य सम्प्रदाय गोरक्षनाथी योगियों का है।
- इन्हें साधारणतः कनफटा और दर्शनी साधु कहा जाता है।
- कनफटा नाम का कारण यह है कि ये लोग कान फाड़कर एक प्रकार की मुद्रा धारण करते हैं।
- इस मुद्रा के नाम पर ही इन्हें "दरसनी" साधु कहते हैं। यह मुद्रा नाना धातुओं और हाथी दाँत की भी होती है। अधिक धनी महन्त लोग सोने की मुद्रा भी धारण करते हैं।
- गोरक्षनाथी साधु सारे भारतवर्ष में पाये जाते हैं। पंजाब, हिमालय के पाद देश, बंगाल और बम्बई में ये लोग "नाथ" कहे जाते हैं।
- ये लोग जो मुद्रा धारण करते हैं, वे दो प्रकार की होती हैं – कुण्डल और दर्शन।
- "दर्शन" का सम्मान अधिक है क्योंकि विश्वास किया जाता है कि इसे धारण करने वाले ब्रह्म–साक्षात्कार कर चुके होते हैं। कुण्डल को "पवित्री" भी कहते हैं।
- नाथमत की मानने वाली बहुत–सी जातियाँ घरबारी हो गयी हैं।
- भारतवर्ष के हर हिस्से में ऐसी जातियों का अस्तित्व पाया जाता है।
- शिमला पहाड़ियों के नाथ अपने को गोरक्षनाथ और भरथरी का अनुयायी मानते हैं। ये लोग गृहस्थ होकर एक जाति ही बन गये हैं।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- यद्यपि ये भी कान चीरकर कुण्डल ग्रहण करते हैं पर इनकी मर्यादा कनफटे योगियों से हीन मानी जाती है।
- ये लोग उत्तरी भारत के महाब्राह्मणों के समान श्राद्ध के समय दान पाते हैं।
- ऊपरी हिमालय के नाथों में भी कान चिरवाकर कुण्डल धारण करने की प्रथा है परन्तु घर में कोई एक या दो आदमी ही ऐसा करते हैं। ऐसा करनेवाले "कनफटा नाथ" कहलाते हैं।
- गृहस्थ योगी वह योगी होता है जो गृहस्थ जीवन जीते हुए भी अपने आध्यात्मिक अभ्यास को निष्कर्ष बनाता है।
- वह अपने परिवार और समाज की देखभाल के साथ–साथ योग, ध्यान, और आध्यात्मिक साधनाओं में भी समय निकालता है।
- गृहस्थ योगी का लक्ष्य अंततः आत्मा की परिपूर्णता की प्राप्ति होती है, जिसे वह अपने गृहस्थ जीवन में अनुभव करते हैं।
- गुरु गोरखनाथ नाथपंथ के प्रमुख प्रवर्तक गुरु माने जाते हैं।
- वे नाथ सम्प्रदाय के महान सिद्ध और योगी थे।
- गोरखनाथ के शिष्यों में हमारे भारतीय संत और सिद्धों की अनेक कथाएं मिलती हैं जो उनकी अद्‌भुत शक्तियों और गहरी ध्यान शक्ति को प्रकाशित करती है।
- उनकी शिक्षाओं में योग, तांत्रिक विद्या, ध्यान और अन्य आध्यात्मिक साधनाओं का विस्तृत वर्णन है। गोरखनाथ ने अपने जीवन काल में अनेक उपदेश दिए और नाथ सम्प्रदाय को आध्यात्मिक ज्ञान की ऊंचाईयों तक ले जाने का मार्ग प्रशस्त किया।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

नाथ पंथ के मूल ग्रंथ और संबंधित साहित्य

- नाथ संप्रदाय नौ महान गुरुओं से जुड़ी एक आध्यात्मिक परंपरा है। इस परंपरा से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथों में "गोरक्ष संहिता", "योग कोरुंटा" और "नाथ चरित" शामिल हैं, जो नाथ योगियों की शिक्षाओं और प्रथाओं पर प्रकाश डालते हैं।
- ये ग्रंथ योग, ध्यान और आध्यात्मिक दर्शन का अन्वेषण करते हैं, नाथ संप्रदाय की रहस्यमय परंपरा में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।
- **योग कोरुंटा** –यह योग और आध्यात्मिक अनुशासन के विभिन्न पहलुओं तथा अष्टांग योग के अभ्यास का वर्णन करता है।
- **कौल ज्ञान** – इसका श्रेय पूरे इतिहास में विभिन्न नाथ योगियों को दिया जाता है, क्योंकि यह शिक्षाओं का एक संग्रह है जिसे नाथ परंपरा के भीतर मौखिक और लिखित रूप से प्राप्त किया जाता है। कौल ज्ञान से जुड़े कुछ प्रमुख नाथ योगियों में मत्स्येंद्रनाथ, गोरखनाथ और उनके शिष्य शामिल हैं। हालाँकि, कौल ज्ञान का विशिष्ट लेखन इसके मौखिक प्रसारण और नाथ परंपरा के भीतर ग्रंथों और शिक्षाओं की विविध शृंखला के कारण हमेशा स्पष्ट नहीं होता है।
- **घेरण्ड संहिता** – हालांकि यह विशेष रूप से नाथ परंपरा से संबद्ध नहीं है, इसमें नाथ सिद्धांतों के साथ संरेखित हठ योग प्रथाओं में परिवर्तनशील अंतर्दृष्टि शामिल है।
- **भक्तमाल** – नाभादास का यह ग्रंथ नवनाथ सहित विभिन्न संतों की जीवन शिक्षाएं प्रदान करता है, जो भक्ति और आध्यात्मिक अनुभवों पर जोर देते हैं।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- **ज्ञानेश्वरी** – हालांकि सीधे तौर पर नाथ साहित्य नहीं, महाराष्ट्र के एक संत ज्ञानेश्वर द्वारा भगवद गीता पर यह टिप्पणी नाथ दर्शन से प्रभावित है।
- **गोरक्ष गीता** – भगवद् गीता के समान, यह पाठ गुरु गोरक्षनाथ से संबंधित है, और गुरु गोरक्षनाथ और उनके शिष्य के बीच संवाद के माध्यम से जीवन, नैतिकता और आध्यात्मिकता के विभिन्न पहलुओं पर शिक्षा प्रस्तुत करता है।
- **महार्थ मंजरी** – यह वास्तव में हिंदू धर्म की नाथ परंपरा के एक प्रमुख व्यक्ति गुरु गोरक्षनाथ से संबंधित एक ग्रंथ है। इस ग्रंथ में नाथ परंपरा से जुड़े अन्य ग्रंथों के समान ही जीवन के विभिन्न पहलुओं, आध्यात्मिकता और व्यावहारिक ज्ञान पर सूत्र और शिक्षाएं शामिल हैं। इसे आध्यात्मिक साधकों, योग और ध्यान के अभ्यासियों के लिए एक मूल्यवान संसाधन माना जाता है।
- **योग बीज** – यह नाथ परंपरा, विशेषकर गुरु गोरक्षनाथ से जुड़ा शब्द है। यह योग के बीज या सार को संदर्भित करता है, जो गुरु गोरक्षनाथ और अन्य नाथ योगियों द्वारा प्रसारित योग के मूलभूत सिद्धांतों, प्रथाओं और शिक्षाओं को समाहित करता है। "योग बीज" में आध्यात्मिक विकास, आत्म–साक्षात्कार और परमात्मा की मूल शिक्षाएं और तकनीकें शामिल हैं।
- **भर्तृहरि रामायण** – यह नाथ परंपरा के 7वें नाथ योगी, भर्तृहरि नाथ द्वारा रामायण महाकाव्य का काव्यात्मक पुनर्कथन है। भर्तृहरि नाथ की साहित्यिक कृतियाँ उनकी दार्शनिक गहराई और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का प्रमाण है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- **शिव संहिता–** वास्तव में नाथ परंपरा में एक महत्वपूर्ण पाठ है। यह एक शास्त्रीय संस्कृत पाठ है जो योग के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्या करता है जिसमें आसन (आसन), प्राणायाम (सांस पर नियंत्रण), मुद्रा (इशारे), और ध्यान तकनीक शामिल हैं। इस पाठ का श्रेय भगवान शिव को दिया जाता है और माना जाता है कि इसे उन्होंने अपनी पत्नी पार्वती को प्रदान किया था। नाथ परंपरा में, "शिव संहिता" योग और ध्यान के अभ्यास के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने वाले साधकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में एक प्रतिष्ठित स्थान रखती है।
- **"हठयोग प्रदीपिका"** को नाथ संप्रदाय में एक मूलभूत पाठ माना जाता है, योग चिकित्सकों की वंशावली नाथ परंपरा की शिक्षाओं के लिए जिम्मेदार है। हालाँकि पाठ को स्पष्ट रूप से नाथ पाठ के रूप में शीर्षक नहीं दिया गया है, लेकिन "गोरक्ष संहिता" और "शिव संहिता" जैसे अन्य प्रमुख ग्रंथों के साथ–साथ नाथ परंपरा के भीतर बड़े पैमाने पर सम्मानजनक ढंग से इसका अध्ययन किया जाता है। "हठयोग प्रदीपिका" में उल्लिखित सिद्धांत और प्रथाएं नाथ योगियों की शिक्षाओं के साथ निकटता से मेल खाती हैं, जो आध्यात्मिक जागरूकता के लिए शारीरिक मुद्राओं (आसन), सांस नियंत्रण (प्राणायाम), शुद्धि तकनीकों (षट्कर्म) और ध्यान के एकीकरण पर जोर देती हैं।
- **नाथ संहिता** – पारंपरिक रूप से इसका श्रेय नाथ संप्रदाय के प्रतिष्ठित आध्यात्मिक गुरुओं, नाथ सिद्धों को दिया जाता है। हालाँकि, कई प्राचीन ग्रंथों की तरह, इसके रचयिता का श्रेय किसी एक व्यक्ति को नहीं दिया जाता, बल्कि इसे नाथ योगियों की पीढ़ियों से चली आ रही शिक्षाएँ माना जाता है। समय के साथ, नाथ संहिता के विभिन्न संस्करण और व्याख्याएँ सामने आई हैं।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

गुरु गोरखनाथ द्वारा रचित प्रमुख ग्रन्थ

- गुरु गोरखनाथ की 28 पुस्तकें संस्कृत तथा 40 पुस्तकें हिंदी भाषा में प्राप्त होती हैं।
- हिंदी भाषा की 40 पुस्तकों का संग्रह डॉ बड़थ्वाल ने "गोरखबानी" नाम से प्रकाशित किया जिनके नाम इस प्रकार हैं –
- सबदी, पद, शिष्या दरसन, प्राण संकली, नरवै बोध, आत्मबोध (1), अभै मात्रा जोग, पन्द्रह तिथि, सप्तवार नवग्रह मछीन्द्र गोरष बोध, रोमावली, ग्यांन तिलक, ग्यांन चौंतीसा, पंच मात्रा, गोरष गणेश गुष्टि, गोरषदत्त गुष्टि (ग्यान दीप बोध), महादेव गोरष गुष्टि, सिष्ट पुरान, दयाबोध, जाती भौंरावली (छन्द गोरख), नवग्रह, नवरात्र, अष्ट पारछ्या, रहरास, ग्यान माला, आत्मबोध (2), व्रत, निरंजन पुराण, गोरख वचन, इन्द्री देवता, मूल गर्भावली, खाणी वाणी, गोरख सत, अष्ट मुद्रा, चौबीस सिद्धि, षडक्षरी, पंच अग्नि, अष्ट चक्र, अबलि सिलूक, काफिर बोध।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी की पुस्तक नाथ संप्रदाय में गुरु गोरक्षनाथ की संस्कृत भाषा से संबंधित 28 पुस्तकें प्राप्त हैं –
- अमनस्क, अमरौघशासनम्, अवधूत गीता, गोरक्ष कल्प, गोरक्ष कौमुदी, गोरक्ष गीता, गोरक्ष चिकित्सा, गोरक्षपञ्चय, गोरक्ष पद्धति, गोरक्ष शतक, गोरक्षशास्त्र, गोरक्षसंहिता, चतुरशीत्यासन, ज्ञानप्रकाशशतक, ज्ञानशतक, ज्ञानामृतयोग, नाड़ीज्ञानप्रदीपिका, महार्थमंजरी, योगचिन्तामणि, योगमार्तण्ड योग बीज, योगशास्त्र, योगसिद्धासनपद्धति, विवेकमार्तण्ड, श्रीनाथसूत्र, सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, हठयोग, हठसंहिता।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं कि इन पुस्तकों में अधिकांश के कर्ता स्वयं गोरक्षनाथ नहीं थे परन्तु इनमें – अमनस्क, अमरौघशासनम्, गोरक्ष पद्धति/गोरक्ष शतक, गोरक्षसंहिता,सिद्ध सिद्धांत पद्धति अधिक महत्वपूर्ण हैं जिनका विवरण विस्तार से इस प्रकार हैं –

- **1. अमनस्क योग** – यह नाथ परंपरा का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसका श्रेय गुरु गोरक्षनाथ को दिया जाता है। यह योग और आध्यात्मिक अभ्यास पर एक ग्रंथ है, जो गुरु गोरक्षनाथ और उनके शिष्य "चौरंगी नाथ" के बीच संवाद के रूप में लिखा गया है। "अमनस्क" शीर्षक का अनुवाद है "मस्तिष्क से परे" या "मन से परे", जो योग अभ्यास के माध्यम से मानसिक सीमाओं को पार करने के उद्देश्य को दर्शाता है।
- **2. अमरोधशासनम् –**

श्री मन्महामाहेश्वराचार्य श्री सिद्ध गोरक्षनाथ विरचितम् यह पुस्तक काश्मीर संस्कृत ग्रन्थावलि (ग्रन्याहू 20) में प्रकाशित हुई है। महामहोपाध्याय पं. मुकुन्दराम शास्त्री ने इसका सम्पादन किया है। यद्यपि यह पुस्तक सन् 1918 ई. में ही छप गयी थी, परन्तु आश्चर्य यह है कि गोरक्षनाथी साहित्य के अध्ययन करने वालों ने इसकी कोई चर्चा नहीं की है। यह पुस्तक बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसमें गोरक्षनाथ के सिद्धान्त का सूत्ररूप में संकलन है। यह पुस्तक हठयोग की साधना का शैवागमों से सम्बन्ध जोड़ती है।

- **3. गोरक्ष शतक** – यह गुरु गोरक्षनाथ के सौ श्लोकों का संग्रह है। इसके छंद आध्यात्मिक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला का निरूपण करते हैं, जैसे वास्तविकता की प्रकृति, मुक्ति का मार्ग, भक्ति और आत्म–अनुशासन का महत्व।
- **4. गोरक्ष संहिता** – गुरु गोरक्षनाथ से संबंधित यह ग्रंथ हठ योग, ध्यान और नाथ परंपरा का विवेचन करता है।
- **5. सिद्ध सिद्धांत पद्धति** – गोरक्षनाथ से संबंधित यह ग्रंथ हठ योग के विभिन्न रूप और सिद्धि की प्राप्ति पर केंद्रित है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

इकाई – 3
नाथपंथ साधना

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

अभ्यास

- गोरखनाथ जी अपनी सबदी (82) के अन्तर्गत कहते हैं कि–

  आसण बैसिबा पवन निरोधिबा, थांन मांन सब धंधा।

  बदंत गोरखनाथ आतमां विचारंत, ज्यूं जल दीसे चंदा।। 82 ।।

- अर्थात् योगाभ्यास की सिद्धि का परमफल है आत्मचिन्तन और आभ्यन्तर साधना। जब तक आत्मा का विचार नहीं किया जाता, आत्मतत्व के परिशीलन में दृष्टि नहीं रहती, तब तक आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार आदि बहिरंग साधनों का कोई महत्व ही नहीं है, वे तो योग की सिद्धि की दिशा में बाह्य उपकरण (धंधा) है, आत्मतत्व का विचार करने से यह पता चल जाता है कि सारा दृश्य (जगत) ब्रह्म का प्रतिबिम्ब है, जिस तरह जल में चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब वास्तविक चन्द्रमा नहीं है, उसी का प्रतिबिम्ब मात्र है, उसी तरह जगत् परमात्मा का प्रतिबिम्ब मात्र है, जगत् ब्रह्म नहीं है, ब्रह्म से प्रतिबिम्बित दृश्य मात्र है।
- नाथपंथ की विचारधारा का आधार भी साधना पक्ष ही है। नाथपंथ का नाम, योग मत और योग सम्प्रदाय अधिक सार्थक हैं क्योंकि इनका मुख्य धर्म ही योगाभ्यास हैं।
- नव नाथों में सर्वप्रथम गोरखनाथ ने अपने हठयोग के माध्यम से व्यक्ति को मोक्ष तक ले जाने की बात कही है।
- हठयोग की साधना, मुख्य रूप से प्राण–साधना है।
- गुरु गोरक्षनाथ के अनुसारः

  हकारः कीर्तितः सूर्यष्ठकारश्चन्द्रउच्च्यते।

  सूर्याचन्द्रमसोर्योशाद् हठयोगोंनिगद्यते।।

  हठयोग की साधना द्वारा साधक शरीर और मन को शुद्ध करके, शून्य में समाधि लगाता है। हठयोग की साधना द्वारा साधक को कुण्डलिनी जागरण के परिणाम स्वरूप ब्रह्म का साक्षात्कार होता है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

गुरु

- नाथ पंथ में प्रमुख तत्व निम्नांकित हैं –

  जीव / जगत् / गुरू / ईश्वर / माया / ब्रह्म / नाद और बिन्दु / परम–सत्ता / आत्मा–परमात्मा
- नाथों के मन में गुरू के प्रति ऊँचे विचार हैं।
- गुरू विहीन साधना का विधान नाथों में नहीं है। गुरू के बिना यहाँ कुछ भी सम्भव नहीं है।
- साधना का मूल रहस्य तब तक समझ में आ नहीं सकता है जब तक योग्य गुरु न मिल जायें। नाथ सम्प्रदाय में गुरू ही मार्ग दर्शक है, तीर्थ आदि बहुत सहायक नहीं है।
- आदिनाथ शिव द्वारा अवतरित नाथ सम्प्रदाय के प्रथम मानव गुरु मत्स्येन्द्रनाथ माने जाते हैं।
- मत्स्येन्द्रनाथ के विख्यात शिष्य महायोगी गोरक्षनाथ थे।
- गोरक्षनाथ ने ही सर्वप्रथम नाथ सम्प्रदाय के विभिन्न मतावलम्बियों का एकीकरण कर इसे संगठित स्वरूप प्रदान किया।

सिद्ध

- नाथ सम्प्रदाय, शैव–सिद्धों द्वारा स्थापित एक साधना परक संगठन है।
- नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित ग्रंथों में नवनाथ और चौरासी सिद्धों का उल्लेख मिलता है।
- 8वीं सदी में 84 सिद्धों के साथ बौद्ध धर्म के वज्रयान की परम्परा का प्रचलन हुआ। ये सभी नाथ ही थे।
- नवनाथ के नाम पर नाथपंथियों में मत विभिन्नता है।
- गोरक्षनाथ सिद्धान्त संग्रह में उल्लिखित नवनाथ हैं : आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, उदयनाथ, दण्डानाथ, सत्यनाथ, संतोषनाथ, कूर्मनाथ, भवनाजिनाथ और गोरक्षनाथ।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

नाथ साधना का स्वरूप

- हठयोग की साधना या नाथयोग की साधना का स्वरूप नाथ साहित्य के साधना ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं।
- हठयोग की पूरी साधना या नाथयोग की पूरी साधना परम एकान्त में स्थित होकर गुरू द्वारा उपदिष्ट मार्ग से सम्पन्न की जाती है।
- गुरू को छोड़कर अभ्यास नहीं करना चाहिए, नही तो सही मार्ग छूट सकता है।
- इस तरह साधक प्राणायाम की तीन कोटियाँ कर सकता है – 1. कनिष्ठ, 2. मध्यम, 3. उत्तम।
- प्राणायाम में तत्पर योगी षट्कर्म के योग को प्राप्त होता है –
  1. धौतिकर्म 2. वास्तविक कर्म 3. नेति 4. त्राटक 5. नौलि 6. कपालभाति
- इस क्रिया को सम्पन्न कर तब योगी को प्राणायाम करना चाहिए।

नाथों का उद्देश्य

- नवनाथों ने अपने हठयोग के माध्यम से व्यक्ति को मोक्ष तक ले जाने की बात कही है।
- हठयोग, ऐसी प्रक्रिया या साधना है, जिससे शारीरिक शुद्धि के साथ ही मानसिक परिष्कार भी किया जा सकता है।
- समाज में सरसता, समरसता, समानता के साथ–साथ आत्म साक्षात्कार की प्राप्ति ही नाथपंथ का प्रमुख उद्देश्य है, अर्थात् नाथ साधना में संसार के बन्धनों से विरक्त होकर शिवत्व को प्राप्त करना ही जीव का चरम् उद्देश्य है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

नाथों की दीक्षा

- गोरखनाथ जी अपनी सबदी (224) के अन्तर्गत कहते हैं कि

  पंथ चले चलि पवनां तूटै तन छीजै तत जाई ।

  काया तैं कछू अगम बतावे ताकी मुंहूं भाई ।। 224 ।।

  अर्थात् पिण्ड में ही समस्त ब्रह्माण्ड तत्वतः समाविष्ट हैं, जो कुछ सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, पर्वत, सरिता, समुद्र आदि ब्रह्माण्ड में हैं, वे ही हमारे पिण्ड में समान रूप से अधिष्ठित हैं।
- योगी को चाहिये कि वह पिण्ड में ही ब्रह्माण्डनायक, अलख निरंजन का योगयुक्ति से साक्षात्कार कर ले, इधर–उधर जिज्ञासावृत्ति से भ्रमण करने से इन्द्रियाँ चंचल हो उठती है, शरीर में प्राण की शक्ति क्षीण होती हैं, शरीर निस्तेज और दुर्बल हो जाता है और आत्मज्ञान अथवा परमात्मबोध की प्राप्ति में बाधा पड़ती है।
- शरीर परमात्मा के स्वरूपानुभव का माध्यम है। वह बाहर भीतर सर्वत्र है।
- यह कोई सिद्ध नही कर सकता कि परमात्मा का स्वरूपबोध शरीर से परे अथवा अगम है।
- मैं ऐसा सिद्ध करने वाले शिष्यत्व ग्रहण कर सकता हूँ पर यह असम्भव है, ऐसा सिद्ध करने वाला अज्ञान, अविद्या का ही परिचय देगा।
- यह स्वतः सिद्ध है कि शरीर में हम परब्रह्म परमात्मा अलख निरंजन का स्वरूपानुभव, करते हैं।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- 'आचार्य हजारी प्रसाद' द्विवेदी का यह मत है कि 'गोरखनाथ' ने 'योगमार्ग को एक व्यवस्थित रूप दिया'।
- उन्होंने शैव प्रत्यभिज्ञा दर्शन के सिद्धान्तों के आधार पर बहुविस्तृत 'कायायोग' के साधनों को व्यवस्थित किया, 'आत्मानुभूति' एवं शैव परम्परा के सामंजस्य से 'चक्रों की संख्या नियत की'।
- उन दिनों अत्यंत प्रचलित वज्रयानी साधना के पारिभाषिक शब्दों के सांवृत्तिक अर्थ को बलपूर्वक पारमार्थिक रूप दिया और अब्राह्मण उद्गम से उद्भूत सम्पूर्ण ब्राह्मण विरोधी साधना मार्ग को इस प्रकार सुसंस्कृत किया कि उसका रूढ़ि विरोधी रूप ज्यों का त्यों बना रहा किन्तु उसकी अशिक्षाजन्य प्रमादपूर्ण रूढ़ियाँ परिष्कृत हो गयीं।
- गोरखनाथ का सबसे बड़ा अवदान यह है कि उन्होंने वाममार्गी तांत्रिक शाक्तों एवं शैवों की लोक विरोधी तत्वों को अस्वीकार करते लोकजीवन में शुचिता, अंहिसा और आचरण की पवित्रता जैसे श्रेष्ठ मनोभावों को अपने संम्प्रदाय का लक्ष्य रखा।
- उन्होंने शैव दर्शन और पतंजलि के हठयोग को मिलाकर अपने सम्प्रदाय का वैचारिक आधार तैयार किया।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी का भी विचार है कि गोरखनाथ की साधना का मूलस्वर शील, संयम और शुद्धतावादी है और उन्होंने तांत्रिक उच्छृंखलताओं का विरोध कर निर्मम हथौड़े से साधु और गृहस्थ दोनों की कुरीतियों को चूर्ण कर दिया।
- 'महायोगी गोरक्षनाथ' ने कठोर ब्रह्मचर्य, वाक्संयम, शारीरिक शुचिता, मानसिक दृढ़ता, ज्ञान, गुरु के प्रति निष्ठा, बाह्य आचरण के प्रति अनादर, आन्तरिक शुद्धि, मद्यमांसादि के पूर्ण बहिष्कार, सहज–सरल जीवन पर बल देकर परवर्ती संत साहित्य के लिए पृष्ठभूमि तैयार करके भक्ति आन्दोलन के उदय की महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि निर्मित की।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- 'रांगेय राघव' की महत्वपूर्ण मान्यता है कि, 'आर्य सामाजिक व्यवस्था के बाहर जो योग था, गोरखनाथ ने उसे न केवल एक परिष्कृत रूप दिया वरन् उसे खींचकर राजयोग के निकट ले आये और हठयोग को राजयोग का अंग बना दिया।'
- स्पष्ट है कि यह कोई सरल कार्य नहीं था।
- कापालिक, शाक्त, कौल, वामाचार आदि साधना पद्धतियाँ गोरखनाथ की सात्विक जमीन पर पहुँचकर परिष्कृत हो गईं और नाथपंथ के समुद्र में विलीन हो गईं।
- हठयोग के माध्यम से बौद्ध, अबौद्ध, शैव तथा ब्राह्मण सभी को एक ऐसी जमीन पर लाकर खड़ा कर दिया, जिससे सभी के बंधन टूटने लगे।
- 'गोरखनाथ' की एक महान देन यह है कि हीनत्व अनुभव करने वाले पुरूष में अनन्त शक्ति का सन्निवेश हो गया। उन्होंने पिण्ड को महत्वपूर्ण माना है और पिण्ड में ही शिव का रूप देखा –

  'जोई पिण्डे, सोई ब्रह्माण्डे।',
- शरीर ही ज्ञान एवं साधना का केन्द्र है, नाथ निरंजन भी परम् ब्रह्म की आरती के लिए है –

  नाथ निरंजन आरती साजै। गुरू के सबद् झालरि बाजै।।
  अनहद नाद गगन में गाजै, परम जोति तहाँ आप बिराजै।।
  दीपक जोति अषंडत बाती, परम जोति जागै दिन राती।।
  सकल भवन उजियारा होई, देव निरंजन और न कोई।।
  अनत कला जाके पार न पावै, संष मृदंग धुनि बैनि बजावै।।
- यही लक्ष्य है, यही योगी की साधना है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- नाथपंथ की सबसे बड़ी भूमिका यह है कि उसने स्थानीय लोकसंस्कृति में संवाद स्थापित किया। उसका दृष्टिकोण सामाजिक है।
- नाथ साहित्य में धार्मिक सहिष्णुता का विकास हुआ, इसलिए बौद्ध धर्म, जैन धर्म के सात्विक तत्वों के प्रति उसमें आत्मीयता का भाव है तो सनातन धर्म के प्रति भी आस्था है।
- यह मत खुले मन से वैचारिक बहस के लिए आमंत्रित करता है।
- नाथ साहित्य एवं गोरखनाथ का महत्वपूर्ण अवदान भक्ति आन्दोलन के विकास में दिखाई देता है।
- निर्गुण साहित्य तो अनुभव, विचार, भाषा एवं शैली की दृष्टि से नाथ साहित्य का ऋणी है। ..

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन रेखांकित करने योग्य है – 'कबीर आदि संतों को नाथपंथियों से जिस प्रकार साखी और बानी मिले, उसी प्रकार साखी और बानी के लिए बहुत कुछ सामग्री और सधुक्कड़ी भाषा भी।'

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

इकाई – 4
नाथपंथ की समकालीन शिक्षाएं एवं उनकी उपादेयता

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- नाथपंथ शुद्ध साधना का मार्ग है। अपने सिद्धान्तों की साथर्कता उसमें यही मानी जाती है कि उनका इसी जीवन में अनुभव किया जाये।
- नाथों ने अलख निरंजन पद में आत्मा को विलीन करने को कहा है, जिसका माध्यम काया योग या हठयोग है। इसमें आन्तरिक वृत्तियों का सर्वाधिक महत्व है, इन्हीं की साधना मूल साधना है।
- बाह्य साधना तो इसी का पूरक है।
- योगी का संसार भीतर होता है, इसी से वह बाह्य जगत् की चिन्ता नहीं करता है।
- गोरक्षनाथ ने हठयोग को प्रधान माना है। इसकी साधना के साथ–साथ तीनों योगों की साधनाएँ भी चलती रहती हैं। जब साधना पूर्ण हो जाती है तो परमपद तथा काया को अमरता मिल जाती है।
- यह पंचभौतिक पिण्ड जिसमें जीवात्मा रहता है, ब्रह्मांड, जिसमें परम शिव रहता है, से समरस हो जाता है। गोरक्षनाथ की रचनाओं में हठयोग की साधना का विधिवत वर्णन है। उनकी पूरी साधना सिद्ध गुरु की देखरेख में चलती है।
- निगुरी साधना की अनुमति कत्तई नहीं है। सारे रहस्यों को सुलझाकर क्रम निश्चित किया गया है, जिससे साधक को कठिनता नहीं होती है।
- यह निम्न हैं – चक्र, स्वरूप, उनके आधार, योग के स्वरूप, लक्षण, अंग, नाडी, आसन, मुद्रा स्थान आदि।
- गोरक्षनाथ की साधना मानवीय है, पर जाति, लिंग, अवस्था और कुल से मुक्त है, परन्तु ज्ञान का महत्व है।
- ज्ञान और साधना का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है, दोनों के योग से ही सिद्धि या परम पद की प्राप्ति होती है।
- नाथ साधना परम सात्विक, संयमित और सहज है। मध्यम मार्ग का अनुसरण किया गया है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- योगी के खान–पान, रहन–सहन, कथनी–करनी, चिन्तन–साधना, वस्त्र आदि पर विधिवत् विचार तथा स्पष्ट निर्देशन है सबमें एकरूपता होनी चाहिए।
- गोरक्षनाथ की साधना का उद्देश्य परमपद या परमशिव की प्राप्ति है।
- नाथ सम्प्रदाय, सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाला, अत्यन्त लोकप्रिय, गौरवशाली तथा क्रान्तिकारी प्रमुख पन्थ है।
- नाथ सम्प्रदाय का विस्तार वैश्विक है।
- नाथ तत्व द्वैत और अद्वैत दोनों से परे है तथा इस के अन्तर्गत कर्मकांडीय उपासना पद्धति के विपरीत योग की महत्ता है।
- नाथपंथ के सिद्धान्त, हिन्दू और मुसलमान, दोनों के लिए स्वीकार्य हैं क्योंकि सम्प्रदाय के सिद्धान्तों में जाति–पांति का विरोध करते हुए हिन्दू–मुस्लिम–समन्वय स्थापना पर बल दिया जाता है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

- नाथ सम्प्रदाय के विचारकों ने निम्न वर्ग को ऊपर उठने के अवसर प्रदान किए थे तथा जनमानस में व्याप्त छुआछूत की भावना का प्रबल विरोध करने के प्रयास किया, यथा –

➢रामदेव जी ने अछूत कन्या डालीबाई को अपनी बहन स्वीकार किया तथा उसे पाल–पोसकर बड़ा किया।
➢पाबूजी द्वारा थोरी जाति के लोगों के साथ खाना–पीना करना।
➢मल्लीनाथ ने जाति बंधन त्यागने का उपदेश दिया था।
➢सूफी मतावलम्बियों ने समाज में ऊंच–नीच के भेदभाव को दूर कर मानवता का संदेश दिया था।
➢विश्नोई पंथ के गुरु जाम्भोजी ने छुआछूत एवं भेदभाव को मिटाने के प्रयास किया।
➢जाम्भोजी ने लोगों में व्याप्त जाति भेद, सम्प्रदाय भेद, धर्म भेद के कारण एक–दूसरे से अलगाव को दूर करने का प्रयास किया।
➢रानी रूपांदे, जो नाथ योगी उगमसी भाटी की शिष्या थी, ने बालसखा धारू मेघवाल के साथ भक्ति का अलख जगाकर छूआछूत की भावना को दूर किया था।

- आधुनिक काल में, नाथपंथ की साधना पद्धतियों का चिकित्सा क्षेत्र में बहुआयामी अनुप्रयोग हो रहा है। नाथपंथ के सिद्धान्त के अन्तर्गत साधना के द्वारा मानव के आध्यात्मिक चेतना के विकास का संदेश अन्तर्निहित है। वर्तमान समय में मानव समाज के सर्वांगीण विकास सहित समस्त पर्यावरणीय सौन्दर्य में संतुलन बिठाने के लिए नाथपंथ के व्यावहारिक उपागमों के विस्तार की अनिवार्य आवश्यकता है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

इकाई – 5
अन्य योगियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

गुरु गोरखनाथ

व्यक्तित्व

- गोरखनाथ अपने युग के महान योगी, धर्मनेता, कवि, लोकनायक एवं दार्शनिक व्यक्ति थे।
- नवीं शती और दसवीं शती के मध्य गोरखनाथ जी का जन्म समय माना जा सकता है।
- जिन दिनों उन्होंने जन्म ग्रहण किया था, उन दिनों भारतीय धर्म साधना में अराजकता की स्थिति थी। गोरखनाथ ने निर्मम हथोड़े की चोट से साधु और गृहस्थ दोनों की कुरीतियों को चूर्ण–विचूर्ण कर दिया।
- गोरखनाथ ने समाज को धर्म और अध्यात्म की ओर उन्मुख करने के लिए नाथ सम्प्रदाय को प्रतिष्ठित किया।
- भेद–भाव, ऊंच–नीच की भावना का विरोध कर उन्होंने समाज को एक नयी दिशा दी।

कृतित्व

- गोरखनाथ के नाम पर अनेकों हिन्दी एवं संस्कृत ग्रन्थ प्रचलित हैं।
- डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन ग्रन्थों की सूची दी है जिनको स्वयं गुरु गोरखनाथ ने लिखा है।
- गोरखनाथ द्वारा हिन्दी में लिखे गये ग्रन्थों को खोज कर डा. पीताम्बर बड़थ्वाल ने गोरखबानी के नाम से संपादन किया है।
- इन हिन्दी ग्रन्थों के अतिरिक्त संस्कृत ग्रन्थों में गोरक्ष शतक प्रमुख है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

साधना एवं क्रियाएं

- नाथ योगियों ने अभ्यास और वैराग्य की दृढ़ता के लिए विभिन्न शारीरिक एवं भौतिक क्रियाओं का आश्रय लिया जैसे भस्म लेपन, कान फड़वाना, माला धारण, श्मशान शयन, नादानुसंधान, कुण्डलिनी साधना आदि।
- नाथयोग की कुछ प्रमुख विशेषताएं है– ऊँकार का जप, पिण्ड ब्रह्माण्ड सिद्धान्त, सामरस्य सिद्धान्त, इडा पिंगला विवेचन, प्राणलय, मनोलय, मुद्रा, बन्ध, चक्र निरुपण, कुण्डलिनी जागरण, नादानुसंधान, सुषुम्ना साधना, गुरु के प्रति तीव्र भक्तियोग।
- हठयोग की साधना के सात अंग बताये गये हैं, जिन्हें हठयोग के सप्ताङ्ग भी कहा जाता है। जो इस प्रकार है– षट्कर्म, आसन, मुद्रा, प्रत्याहार, प्राणायाम, ध्यान और समाधि।
- षट्कर्म में धौति, बस्ति, नेति, नौलि, त्राटक व कपालभाति– ये छः कर्म है। जो हमारे शरीर का शोधन कर उसको स्वस्थ करने में सहायता प्रदान करते हैं।
- स्थिरता से सुखपूर्वक अधिक समय तक बैठने को आसन कहा जाता है।
- जिन क्रियाओं से प्राणायाम प्रत्याहारादि अङ्गों की सिद्धि में सहायता प्राप्त होती है, उन सुकौशलपूर्ण क्रियाओं का नाम मुद्रा है।
- जिन–जिन विषयों में मन जाता है, उन विषयों से मन को लौटाकर आत्मा के वश में करना प्रत्याहार कहलाता है।
- शरीर की नाड़ियों में प्राण के प्रवाह को प्रयासपूर्वक स्थिर रखने की क्रिया प्राणायाम कहलाता है।
- चित्त में अलख निरञ्जन परमात्म तत्त्व का निर्मल चिन्तन ही ध्यान कहलाता है।
- आत्मा और परमात्मा में एकत्व होने पर समस्त संकल्प नष्ट हो जाते हैं, वह अवस्था ही समाधि होती है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

भगवान बुद्ध

व्यक्तित्व व कृतित्व

- भगवान बुद्ध ने स्वयं मार्ग का अन्वेषण कर समाधिस्थ होकर अपनी प्रज्ञा से बोधितत्त्व को प्राप्त किया।
- सारनाथ में पंच भिक्षुओं के सामने अपना प्रथम उपदेश देकर इन्होंने धर्म चक्र–प्रवर्तन किया।
- गौतम बुद्ध के समस्त उपदेशों को त्रिपिटक में संग्रह किया गया है। त्रिपिटक आरम्भिक बौद्ध–दर्शन का मूल और प्रामाणिक आधार है। सुत्तपिटक, अभिधम्म पिटक तथा विनय पिटक– ये तीन पिटकों के नाम हैं।
- सुत्तपिटक में धर्म सम्बन्धी बातों की चर्चा है, अभिधम्म पिटक में बुद्ध के दार्शनिक विचारों का संकलन है तथा विनयपिटक में नीति–सम्बन्धी बातों की चर्चा है।

चार आर्य–सत्य

- चार आर्य–सत्य बौद्ध धर्म के सार हैं।
- (1) इस संसार में जीवन दुःखों से परिपूर्ण है (दुःख),
- (2) इन दुःखों का कारण विद्यमान है (दुःख समुदाय),
- (3) इन दुःखों से वास्तविक मुक्ति मिल सकती है (दुःख निरोध) तथा
- (4) इस निरोध–प्राप्ति के लिए उचित उपाय भी है (दुःख निरोधगामिनीप्रतिपदा)।
- इन्हीं सत्यों के सम्यक् ज्ञान के कारण उन्हें सम्बोधि प्राप्त हुई।
- ये चार आर्य–सत्य प्रत्येक साधकों के लिए साधना के पूर्व बौद्ध धर्म में आवश्यक माना गया है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

प्रतीत्यसमुत्पाद

- यह द्वितीय आर्य सत्य के अंतर्गत है।
- दुःख के उत्पत्ति के लिए केवल एक ही कारण नहीं है, प्रत्युक्त कारणों की एक लम्बी श्रृंखला है जो द्वादश निदान के नाम से जाना जाता है।
- ये द्वादश निदान है– (1) अविद्या, (2) संस्कार, (३) विज्ञान, (4) नामरूप, (5) षडायतन, (6) स्पर्श, (7) वेदना, (8) तृष्णा, (9) उपादान, (10) भव, (11) जाति तथा (12) जरामरण।
- द्वादश निदानों का दूसरा नाम प्रतीत्यसमुत्पाद है, जो बौद्ध धर्म का मौलिक सिद्धान्त माना जाता है।

अष्टांगिक मार्ग

- मूल कारण अविद्या का विद्या के द्वारा निरोध कर देने पर दुःख निरोध अवश्य हो जाता है। दुःख निरोध को बुद्ध ने निर्वाण कहा है। निर्वाण की प्राप्ति का मार्ग अष्टांगिक मार्ग है।
- यही दुःख निरोध तक पहुँचाने वाला मार्ग है।
- इस मार्ग को दुःख निरोध मार्ग कहा जाता है। इसी मार्ग को बौद्ध धर्म में आर्य अष्टांगिक मार्ग कहा गया है।
- ये आठ अंग हैं– (1) सम्यक दृष्टि, (2) सम्यक् संकल्प, (3) सम्यक वाक् (4), सम्यक कर्म, (5) सम्यक आजीव, (6) सम्यक् व्यायाम, (7) सम्यक् स्मृति तथा (8) सम्यक् समाधि।
- इस अष्टांगिक मार्ग के यथार्थ सेवन से प्रज्ञा उत्पन्न होता है और निर्वाण की प्राप्ति हो जाती है।
- बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग को शील, समाधि एवं प्रज्ञा– इन तीन भागों में विभाजित किया गया है, जो कि बौद्ध धर्म में शिक्षात्रय के नाम से प्रसिद्ध है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

महर्षि पतंजलि

व्यक्तित्व

- लगभग ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी में भारतीय साहित्य के आकाश में महर्षि पतंजलि का उदय हुआ।
- मुनि पतंजलि ने योग विद्या का प्रारम्भ नहीं किया अपितु आदिकाल से गुरु शिष्य परम्परा से चली आ रही योग विद्या को, जिसके बीज वेद, उपनिषद्, सूत्र, स्मृति, बौद्ध, जैन, तंत्र आदि ग्रन्थों में बिखरे पड़े थे, उनको समेटकर अपनी योगसाधना के गहन अनुभवों, अनुसन्धानों एवं सुदृढ़ दार्शनिक चिन्तन के आधार पर एक अनुपम एवं अद्भुत ग्रन्थ योगसूत्र की रचना की।

कृतित्वः योगसूत्र

- पतंजलि के द्वारा प्रणीत चार अध्यायों (पादों) वाला योगसूत्र योग विद्याओं का आकरग्रन्थ कहा जा सकता है। पतंजलि ने सूत्र रूप में सभी योग पद्धतियों का संग्रह अपने ग्रन्थ में किया है।
- इसमें कुल 195 सूत्र हैं।
- महर्षि पतंजलि रचित योगसूत्र चार पादों में विभक्त है– समाधि पाद, साधनपाद, विभूतिपाद और कैवल्यपाद।
- पातंजल योगसूत्र की व्याख्या के लिए रचित व्यासभाष्य प्रामाणिक भाष्य है।
- व्यासभाष्य की दुरुहता को भांप कर अनेक विद्वानों ने टीकाएँ लिखी, जिनमें वाचस्पति मिश्र की तत्त्ववैशारदी, विज्ञान भिक्षु का योगवार्तिक, हरिहरानन्द आरण्य की भास्वती, एवं योगसूत्र पर भोजराज का राजमार्तण्ड, सदाशिवेन्द्र का योगसुधाकर, रामानन्द यति की मणिप्रभा आदि प्रसिद्ध हैं।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

अष्टांग योग

- पतंजलि का मुख्य लक्ष्य है– चित्तवृत्ति निरोध। चित्तवृत्ति निरोध को ही योग कहा जाता है।
- चित्तवृत्ति निरोध के लिए उन्होंने केवल दो साधनों का प्रमुख रूप से उल्लेख किया है। अभ्यास और वैराग्य।
- योग की साधना अष्टांग योग के द्वारा की जाती है।
- अष्टांग योग के आठ अंग है– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।
- यम 5 है– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।
- नियम भी 5 है– शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर–प्रणिधान।
- आसन की सिद्धि हो जाने पर श्वास–प्रश्वास की गति को रोक देना प्राणायाम कहलाता है।
- इन्द्रियों का अपने विषयों से विमुख होकर एकाग्र हुए चित्त के स्वरूप का अनुकरण करना प्रत्याहार कहलाता है।
- देश विशेष में चित्त के बांधने को धारणा कहा जाता है।
- जिस स्थान विशेष पर धारणा की जाती है, उस स्थान पर वृत्ति के समान रूप से निरन्तर बने रहने को ध्यान कहते हैं।
- निरन्तर अभ्यास से ध्यान की प्रगाढ़ता बढ़ती जाती है और ध्यान समाधि के रूप में परिवर्तित हो जाता है।
- समाधि के दो भेद हैं– सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात।
- निरन्तर अभ्यास ही साधक को कैवल्य की प्राप्ति कराता है और योगी जन्म मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

स्वामी विवेकानन्द

व्यक्तित्व

- स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को हुआ था। भारत में उनका जन्मदिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- वे साधु, दार्शनिक, लेखक, धार्मिक शिक्षक और भारतीय रहस्यवादी रामकृष्ण के प्रमुख शिष्य थे।
- वह पश्चिमी दुनिया में वेदांत और योग की शुरूआत करने वाले एक प्रमुख व्यक्ति थे और आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के जनक थे, जिन्हें अंतरधार्मिक जागरूकता बढ़ाने और हिंदू धर्म को दुनिया का प्रमुख धर्म का दर्जा देने का श्रेय दिया जाता है।
- उन्होंने 1893 में शिकागो में धर्म संसद में भाग लिया। धर्म संसद में बड़ी सफलता के बाद, विवेकानंद ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के मूल सिद्धांतों का प्रसार करते हुए सैकड़ों व्याख्यान दिए।
- भारत में, विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन व रामकृष्ण मठ की स्थापना की, जो मठवासियों और गृहस्थ भक्तों को आध्यात्मिक प्रशिक्षण, सामाजिक कार्य और शिक्षा प्रदान करता है।

कृतित्व

- विवेकानन्द के ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग और राजयोग, ये सभी हिंदू दर्शन पर उत्कृष्ट ग्रंथ हैं।
- इसके अलावा, उन्होंने अनगिनत व्याख्यान दिए, अपने कई दोस्तों और शिष्यों को अपने हाथ से प्रेरित पत्र लिखे, कई कविताओं की रचना की।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

नव–वेदांत

- विवेकानंद नव–वेदांत के मुख्य प्रतिनिधियों में से एक थे, जो भारत के गूढ़ परंपराओं, विशेष रूप से ट्रान्सेंडैंटलिज्म आदि की आधुनिक वैज्ञानिकता के अनुरूप हिंदू धर्म के चयनित पहलुओं की आधुनिक व्याख्या की।
- उनकी पुनर्व्याख्या बहुत सफल रही, इससे भारत के भीतर और बाहर हिंदू धर्म की एक नई समझ और सराहना पैदा हुई और योग, ट्रान्सेंडैंटल मेडिटेशन और भारतीय आध्यात्मिक आत्म–सुधार का मार्ग खुला।
- विवेकानन्द ने इस विचार का समर्थन किया कि हिंदू धर्म के भीतर के सभी संप्रदाय (और सभी धर्म) एक ही लक्ष्य के लिए अलग–अलग रास्ते हैं।

योग सम्बन्धी विचारधारा

- उन्होंने मानवता को धर्म की नई समझ दी।
- मनुष्य के बारे में नया दृष्टिकोण प्रदान किया और नैतिकता का नया सिद्धांत देकर पूर्व और पश्चिम के बीच सेतु का कार्य किया।
- विवेकानंद का मत था कि जीवन का लक्ष्य है मोक्ष की प्राप्ति।
- लेकिन जब तक मनुष्य स्वयं में ब्रह्म होने की अनुभूति प्राप्त नहीं कर लेता, वह मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।
- इस सिद्धि को प्राप्त करने के अनेक मार्ग हैं।
- योग को चार वर्गों कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग व ज्ञानयोग में विभक्त किया जा सकता है।
- इसमें से प्रत्येक ब्रह्म सिद्धि का परोक्ष मार्ग है। ये योग विभिन्न स्वभाव के लोगों के अनुकूल होते हैं।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

स्वामी योगानन्द

व्यक्तित्व

- योगानन्द का जन्म 5 जनवरी 1853 को गोरखपुर में हुआ था। वे स्वामी युक्तेश्वर के शिष्य थे।
- स्वामी योगानंद के रूप में वे 1920 में अमेरिका पहुंचे और अगले चार वर्षों के लिए अपने आध्यात्मिक अभियानों पर पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा करते रहे।
- 1920 में, उन्होंने सेल्फ–रियलाइज़ेशन फ़ेलोशिप की स्थापना की और 1925 में लॉस एंजिल्स, कैलिफ़ोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका में एसआरएफ का अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय स्थापित किया।
- सन 1920 से 1930 तक हजारों अमरीकी जनता ने उनकी क्रियायोग पद्धति से आकृष्ट होकर उनका शिष्यत्व ग्रहण किया।
- उन्होंने योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया की स्थापना की।

कृतित्व

- योगी की आत्मकथा परमहंस योगानंद के जीवन के अनुभवों का प्रत्यक्ष विवरण है।
- उनकी योगी की आत्मकथा, जो पहली बार 1946 में प्रकाशित हुई, ने पश्चिम में आध्यात्मिक क्रांति शुरू करने में मदद की।
- पचास से अधिक भाषाओं में अनुवादित, यह आज भी सबसे अधिक बिकने वाला आध्यात्मिक क्लासिक बना हुआ है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

आत्म–साक्षात्कार का मार्ग क्रियायोग

- क्रियायोग योगानंद को गुरु परंपरा से प्राप्त हुआ।
- महावतार बाबाजी ने लाहिड़ी महाशय को क्रिया तकनीक सिखाई, जिन्होंने इसे अपने शिष्य, योगानंद के गुरु, स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरि को सिखाया।
- योगानंद द्वारा पश्चिम में लाया गया स्थायी योगदान आत्म–साक्षात्कार का गैर–सांप्रदायिक, सार्वभौमिक आध्यात्मिक मार्ग है।
- उन्होंने ईश्वर के प्रत्यक्ष आंतरिक अनुभव पर जोर दिया।
- उनकी शिक्षाएँ गैर–सांप्रदायिक हैं और आध्यात्मिक जागृति के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।
- इस उत्कृष्ट आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त करने के साधन के रूप में योगानंद ने अपने अनुयायियों को क्रियायोग की प्राचीन तकनीक में दीक्षित किया, जिसे उन्होंने 'भगवान के लिए जेट–हवाई मार्ग' कहा।
- क्रिया योग का मार्ग दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता के साथ उन्नत योग तकनीकों के अभ्यास को जोड़ता है और इसे गुरु परंपरा से के माध्यम से सीखा जा सकता है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

श्री अरविन्द

व्यक्तित्व

- श्री अरविन्द का जन्म 15 अगस्त 1872 को हुआ था।
- उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों में भी हिस्सा लिया। शीघ्र ही वे आध्यात्मिकता की तरफ मुड़ गए।
- श्री अरबिंद ने अपना योग 1904 में शुरू किया। बड़ौदा में एक महाराष्ट्रीयन योगी लेले से मिलने तक योग में उनका कोई सहायक या गुरु नहीं था; और वह केवल थोड़े समय के लिए था।
- श्री अरविन्द ने सन् 1908 में योग में पद्धतिपूर्वक प्रवेश किया था। 1910 से 1914 तक का समय अरविन्द की मौन साधना का काल था।
- 1914 तक छः वर्ष के अन्तराल में उनके समझ में नई चेतना का अवतरण की साधना का कार्य स्पष्ट हो गया।
- उत्कट साधना के लिए अरविन्द 1926 में एकान्त में चले गए थे।

कृतित्व

- उनकी मुख्य साहित्यिक कृतियाँ 'द लाइफ डिवाइन' है, जो इंटीग्रल योग के दार्शनिक पहलू से संबंधित है।
- द सिंथेसिस ऑफ योगा, जो समग्र योग के सिद्धांतों और विधियों से संबंधित है।
- सावित्रीः ए लीजेंड एंड ए सिंबल, यह एक महाकाव्य है।
- गीता पर निबंध, यह गीता पर लिखे निबंधों का संग्रह है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

दर्शन एवं समग्र योग

- श्री अरविंद की समग्र योग प्रणाली की अवधारणा का वर्णन उनकी पुस्तकों, द सिंथेसिस ऑफ योगा और द लाइफ डिवाइन में किया गया है।
- श्री अरविंद का तर्क है कि दिव्य ब्रह्म, लीला या दिव्य खेल के माध्यम से अनुभवजन्य वास्तविकता के रूप में प्रकट होता है।
- आध्यात्मिक अभ्यास का अंतिम लक्ष्य न केवल मुक्ति हो सकता है, बल्कि इसे दिव्य अस्तित्व में बदलने के लिए दुनिया में दिव्य का अवतरण भी हो सकता है।
- समग्र योग, जिसे कभी–कभी अतिमानसिक योग भी कहा जाता है, श्री अरविंद और द मदर (मीरा अल्फासा) का योग–आधारित दर्शन और अभ्यास है।
- समग्र योग के केंद्र में यह विचार है कि आत्मा स्वयं को शामिल करने की प्रक्रिया में प्रकट होती है, इस बीच अपनी उत्पत्ति को भूल जाती है। विकास की विपरीत प्रक्रिया आत्मा की पूर्ण अभिव्यक्ति की ओर प्रेरित होती है।
- समग्र योग का लक्ष्य ईश्वर के प्रति जागरूक होना, स्वयं के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं को एकीकृत करना और पृथ्वी पर ईश्वर को प्रकट करना है।
- श्री अरविंद के अनुसार, संपूर्ण जीवन योग है, जबकि साधना के रूप में योग आत्म–पूर्णता की दिशा में एक व्यवस्थित प्रयास है, जो अस्तित्व की अव्यक्त, छिपी संभावनाओं को अभिव्यक्ति देता है।
- इस प्रयास में सफलता मानव व्यक्ति को सार्वभौमिक और पारलौकिक अस्तित्व के साथ एकीकृत करती है।
- समग्र योग सीमित में अनंत, लौकिक में कालातीत और पारलौकिक को अन्तर्यामी के साथ पुनः जोड़ता है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

संदर्भ ग्रंथ

- नाथ–सम्प्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- गोरख–बानी, पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, हिंदी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग, इलाहाबाद
- नाथ संप्रदाय और साहित्य, वेद प्रकाश जुनेजा, गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर
- गोरख दर्शन, अक्षय कुमार बनर्जी, गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर
- गोरक्ष–संहिता, सं0 चमनलाल गौतम, संस्कृति संस्थान, बरेली
- भारतीय दर्शन, दत्त एवं चटर्जी, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली
- समकालीन भारतीय दर्शन, बसंत कुमार लाल, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली
- ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए योगी, स्वामी योगानन्द, योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया, कोलकाता
- नाथ पंथ, डॉ. प्रदीप कुमार राव, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- नाथपंथ का समाज दर्शन, डॉ. प्रदीप कुमार राव, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- सृष्टि–सृजन और योग का विज्ञान, डॉ. भारती सिंह एवं प्रो. डी. के. सिंह, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- गोरक्षनाथ विविध संदर्भ, संतोष कुमार सिंह, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

mygsgsp@gmail.com
https://whatsapp.com/channel/0029Va9xg0560eBmO8jUhe0n
https://www.facebook.com/profile.php?id=61551992553606
https://www.facebook.com/mygsgsp/
https://x.com/Gorakshpeeth
https://www.youtube.com/@mygsgsp
+91- 8299829806, 9415848512, 9935823171, 9415286885
http://www.ggnsp.ddugu.ac.in/

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ